MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2023
Issue 48, Vol-02

Date of Publication
01 Oct. 2023

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by PDF Scanner

26) 'धूमिल' के जीवन के संघर्ष
पूनम राय, आजमगढ़ ||124

27) भीष्म साहनी के नाटकों में वृद्ध जीवन
रूपलाल कुमार, हजारीबाग ||130

28) विश्वम्भरनाथ उपाध्याय के उपन्यासों का राजनीतिक यथार्थ
डॉ. रेखा शर्मा, अम्बाला शहर ||132

29) महिला सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की उपादेयता
डॉ० माधुरी वर्मा, सविता राजन, अयोध्या, उ०प्र० ||135

30) आंदोलन में नेतृत्व की भूमिका
DR. PRAVEEN PATHAK, Chhattisgarh ||137

31) आदिवासी मानवाधिकार और समकालीन हिन्दी उपन्यास
सीमाकुमारी मीना, प्रो. प्रमोद कुमार शर्मा, टोंक, राजस्थान ||142

32) भारत में महिला किसानों के अदृश्य हाथ
Shikha Singh, Barabanki ||148

33) तृतीय लिंग जीवन के संघर्षों का आख्यान
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, डी. श्रीदेवी, चेन्नई ||151

34) वर्तमान भारतीय समाज में मूल्य संकट के सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की भूमिका
श्रीमती बबिता रानी श्रीवास्तव, जनपद–शाहजहाँपुर (उ.प्र.) ||153

35) रामराज्य से मोटी–राज तक : भारतीय अर्थव्यवस्था
डॉ० विष्णु कुमार शुक्ल, लखीमपुर–खीरी ||158

36) आदि तुर्क वंश एवं दास प्रथा
अरविन्द सुलानिया, श्रीगंगानगर ||165

37) बालिकाओं के विद्यालयीकरण में समस्यायें एवं समाधाने
डॉ० बन्दना तिवारी, उरई (जालौन) ||169

38) 'मुट्ठी भर कांकर' में किसानों के विस्थापन की समस्या
विनय कुमार रविदास, हजारीबाग (झारखण्ड) ||171

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

Scanned by PDF Scanner

है की आज ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं सिर्फ चूल्हा – चौका तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपने परिवार के भरण– पोषण के लिए अब महिलाएं खेत – खलिहानो में भी अपना पूरा योगदान दे रही है। घर की चार दीवारी को तोड़कर, समाज की रूढ़िवादी सोच को बदल कर महिला किसान बनने के साथ–साथ, आज वह उत्पादन को बढ़ने के लिए नए–नए नवाचारों व तकनीकों का भी इस्तेमाल करना सीख रही है। भारत जैसे देश में महिलाओं को खेती के लिए उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और बेहतर फसल होने पर उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, इसके साथ ही उन्हें पुरुषों के बराबर कृषि कार्य के लिए मेहनताना हक भी दिया जाना चाहिए। महिलाओं और पुरुषों में भेद काम किया जाये तो स्थिति मेंसुधार लाया जा सकता है। भारत को प्रगतिशील बनाने के लिए ग्रामीण भारत का विकास किया जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि यह महिलाएं ही एग्रीकल्चर सेक्टर की रीढ़ की हड्डी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

१– कुरुक्षेत्र पत्रिका (सन २०१८)

२– कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट य खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय की रिपोर्ट

३– ग्रामीण विकास मंत्रालय की वेबसाइट

4- https://mksp.gov.in

5- https://data.gov.in

6- https://rural.nic.in

7- https://researchgate.net

8- https://drishtiias.com

9- https://hindi.indiawaterportal.org/articles/karsai-kasaetara-maen-mahailaaon-kai-sahabhaagaitaa

10- https://icar.org.in/files/reports/icar-dare-annual-reports/2011-12/Empowerment-of-Women-in-Agriculture-hindi-AR-2011-12

11- https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1703232

12- https://www.indiabudget.gov.in/budget2019-20/economicsurvey/doc/vol2chapter/hechap07_vol2.pdf

❑❑❑

33

तृतीय लिंग जीवन के संघर्षों का आख्यान

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
शोध निदेशिका,
वेल्स विश्व विद्यालय, चेन्नई

डी. श्रीदेवी
शोधार्थी,
वेल्स विश्व विद्यालय, चेन्नई

आधुनिक साहित्य में तृतीय लिंग विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय हो रहा है। आधुनिक लेखकों ने तृतीय लिंग की इच्छा को अपने लेखन के माध्यम से व्यक्त किया है। हिंदी साहित्य में तृतीय लिंग विमर्श पच्चीस सालों से चल रहा है। कई लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तृतीय लिंगों की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। हिंदी साहित्य में तृतीय लिंग विमर्श मात्रा पूर्वग्रहों या व्यक्तिगत विश्वासों तक ही सीमित नहीं, उसके और भी कई आयाम है। इन आयामों को तलाशने की कोशिश में आधुनिक लेखन अपने लेखन के माध्यम से किया है। समाज ने तृतीय लिंग लोगों पर सदियों से अपना शिकंजा जागता हुआ है। यह लोग लिंग की दृष्टि से भले ही अपूर्ण होते हैं परंतु, मानवीय गुण के रूप में प्रेम, करुणा और ममता जैसे प्रवृत्तियां स्वाभाविक रूप से उनके भीतर ही होता है। लेकिन उनको वह व्यक्त नहीं कर सकते हैं यहां तो यूं कहीं ही समाज का नफरत भरा व्यवहार उनके व्यक्त करने का अवसर ही नहीं देता है१

वर्तमान दौर पर शिक्षित तृतीय लिंग अपने परिवार के साथ कंधे से कंधे मिलाकर अपने आप को स्थापित करने की कोशिश करते हैं। आजकल के परिवेश में तृतीय लिंग शिक्षित होने के बावजूद भी उन पर कई प्रकार की शोषण होता है। मालती मिश्रा के

Scanned by PDF Scanner

उपन्यास 'मंजरी' में शिक्षित तृतीय लिंग की सामाजिक स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया गया है। उपन्यास का प्रमुख पात्र मंजरी रहती है कि मै जान बूझकर थर्ड जेंडर में अपने आप को नहीं रखा शुरू से ही बल्कि जब से पढ़ाई शुरू की हर जगह ह्यूमिलिएशन झेला, उसके बावजूद भी मै अपने सोच के में दृढ़ रही मै एक हिजड़ा हूं इसलिए मुझे अपने घर परिवार छोड़कर अपने कम्युनिटी में चले जाना चाहिए और चौराहे पर, बाजार में, ट्रेन में ताली बजा–बजाकर बच्चे की बरही, शादी ब्याह में नाच–गाकर ताली पीटकर नजराना मांगना चाहिए और उसी से गुजर करना चाहिए हमारी मृत्यु होने तक।२ मंजरी एक शिक्षित तृतीय लेंगे है जो पहले अटेम्प्ट में की यूपीएससी परीक्षा पास हो गई। लेकिन सिलेक्शन कमिटी ने मंजरी से उसकी लिंग सर्टिफिकेट मांग रहे है। तब मंजरी अपने वकील शोभा गोखले से कहती है कि वह जानबूझकर अपनी पढ़ाई में जीत हुई। फिर भी इस समुदाय को मेरे लिंग का पहचान देना है। क्या तृतीय लिंग लोगों अपने मरण तक सिर्फ शादी में नाचना गाना ताली पीटने का काम ही लगाना है? इस प्रकार उपन्यासकार मंजरी द्वारा शिक्षित तृतीय लिंग की शोषण के बारे में अवगत कराया है।

समाज की बहिष्कृत, तृतीया लिंग को बचपन से ही झेलना पड़ता है। अगर, किसी परिवार के जन्मजात तृतीय लिंग पैदा हुई तो, समाज की मजाक, उपेक्षित के कारण परिवारवालों उसे बच्चों को त्याग देते हैं। नादान बच्चे सिर्फ तृतीय लिंगी होने के कारण जिंदगी के हर परिस्थिति में अपमान झेलना पड़ता है। जब शारीरिक परिवर्तन होने से ही इस तरह अपमान, मजाक सहना पड़ता है रेनू बहुल कृत उपन्यास 'मेरे होने से क्या बुराई है' में शिखा जो तृतीय लिंग कहती हैं आठवीं कक्षा तक आते–आते मेरे चाल–ढाल, बात करने का अंदाज, राहो–रस्म की पाबंदी, तौर–तरीके में बदलाव आ चुका था। दूसरे लड़कों की तरह मेरे शरीरिक अंग पूरी तरह उभर नहीं थे। ऐसा महसूस होता था, जैसे मर्द के जिस्म में औरत की रूह कैद है। मोहल्ले के स्कूल के बच्चे मुझे छक्का का कर छेड़ने लगे।३ शिखा यानी शिखर स्कूल पढ़ते समय ताकि किशोरावस्था में उसके शरीर में बहुत सारे बदलाव आने की महसूस किया। स्कूल में उसके सहपाठियों उसकी आवाज, चाल चलन को देखकर उसे छक्का बोलकर मजाक उड़ाते हैं। दुनिया में हर किसी के लिए शारीरिक परिवर्तन एक स्वाभाविक बात है। इस पर मजाक उड़ाना, उपेक्षा करना अविकसित की बात है।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है। जहां हर परिवार के समाप्त अधिकार पुरुषों के हाथ में ही रहता है। हर एक समस्याओं का समाधान पुरुष ही करता है। महेंद्र भीष्म कृत 'मैं पायल' उपन्यास में जुगनी के पिता कहते हैं की शांति जुगनी को लड़के की आदत सिखाओ, उसे लड़का बनाकर रखो..... वह हिजड़ा है। लड़की के रूप में बड़ी होने पर समाज के लोग उसकी शादी रिश्ते की बातें करेंगे और लड़के के रूप में कोई कुछ नहीं कहेगी....।४ जुगनी जो तृतीय लिंग होने के कारण अपने पिताजी के निर्णय के अनुसार वह जुगनू बनकर जीना पड़ता है। इस समाज में न सिर्फ नारी शोषण होता है। लड़कियों का बलात्कार, अत्याचार, मजदूरी आदि सभी हो रहा है। लड़कियों को इस समाज में सुरक्षा नहीं है। इसलिए जुगनी के पिताजी उसे लड़के के वेशभूषा में रहने की फैसला की। जुगनी, अपने परिवार को इस समुदाय अभिशाप नहीं मनाना चाहती। इसलिए अपने पिताजी के सलाह के अनुसार जुगनू बनकर रहने लगी और अपने मन की इच्छा को त्याग दिया।

सरकार ने तृतीय लिंग लोगों के लिए कई सुविधाएं दिए हैं। शिक्षा, मतदान, नौकरी, पेंशन, मौलिक अधिकार, राष्ट्रीय पोर्टल, हेल्पलाइन पॉलिसी सभी सरकार द्वारा दिया गया है। शिक्षित होने पर भी तृतीय लिंग कई परिस्थितियों में उपेक्षा, अपमान झेलना पड़ता है। समाज में शिक्षित व्यक्तियों भी तृतीय लिंग लोगों घृणा के साथ व्यवहार करते हैं। रेनू बहुल कृत "मेरे होने में क्या बुराई है' उपन्यास में सितारा जो तृतीय लिंग कहती है पढ़े लिखे डॉक्टर नर्स भी हमें अछूत समझते हैं। अच्छी तरह हाथ लगाना, मुआयना करने से भी हिचकिचाते हैं।५ सितारा अपने समूह की संघर्षो को गंभीरता से कहती है जो शिक्षित लोगों भी तृतीय

Scanned by PDF Scanner

लिंग को अछूत मानते है। उनकी शारीरिक परिवर्तन, आवाज, पहनाव को देखकर लोग के मन में हिचकिचाते है। उपन्यास में सिताय द्वारा तृतीय लिंग की असली सामाजिक स्थिति का अमानवीय चित्रण देखने को मिलता है।

निष्कर्ष :

केवल एक शारीरिक कमी के कारण जन्म से मरण तक कितना मुश्किलों से गुजरना पड़ता है। अपने मान सम्मान के लिए कितना संघर्ष झेलना पड़ता है, इसका स्पष्ट चित्रण इन उपन्यासों में रेखांकित है। इन उपन्यासों में तृतीय लिंग के हर तरह की स्थिति और परिस्थिति का वर्णन किया है। किस प्रकार तृतीय लिंग सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं राजनीतिक रूप से शोषण हो रहा है उसका वर्णन बखूबी चित्रत किया है। समस्या किसी भी प्रकार हो लेखकों ने अपने उपन्यासों में तृतीय लिंग और उनकी परिस्थिति का वर्णन हमारे सामने दर्पण का भांति प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. डॉ. दिलीप मेहरा, हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समाज, माया प्रकाशन कानपुर, प्र.सं २०१८, पृ सं.३९

२. मालती मिश्रा, मंजरी, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, प्र.सं २०२२, पृ सं. ११५

३. रेनू बहल, मेरे होने से क्या बुराई है, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. २०२०, पृ सं. २०

४. महेंद्र भीष्मा, मैं पायल, अमन प्रकाशन, कानपुर, चतुर्थ.सं. २०१९, पृ सं.२०

५. रेनू बहल, मेरे होने से क्या बुराई है, सामायिक प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.सं. २०२०, पृ सं. ३७

❑❑❑

34

वर्तमान भारतीय समाज में मूल्य संकट के सन्दर्भ में मूल्य शिक्षा की भूमिका

श्रीमती बबिता रानी श्रीवास्तव
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय, खुतआपुर, शिक्षा क्षेत्र–सिंधौली,
जनपद–शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

Abstract

India has always been proud of its rich culture, philosophy and grand ways of life. Butr now the mistake concept of modernity, egosim, nihilism, illogical approval of westren wasy had made Indians disbelief in our ways and ideals of life. Hence there is a great need of value education.

According to Indian philosophy life without values is a meaningless and a baseless concept To determine suitability and appropriatencess of value education is essential. For this purpose appropriate vedic values, common ideals of Jainism Budhism and Gandhian religions to be included in value education of children. Ours is a culture of dyversities, thereore, values of co-existance, teram work, co-operation, social service to be included in value education.

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन आदि की गौरवशाली परम्पराओं पर सदैव गर्व करता रहा है, परन्तु आज अनास्था तथा पारम्परिक अविश्वास के वातावरण में हमारी प्राचीन परम्परा एवं मूल्य धूमिल से हो गये है। आधुनिकता की भ्रामक अवधारणा, अस्तित्ववादी जीवन, अनात्मपरक नास्तिकता, पाश्चात्य सभ्यता का आधुनिकरण, तर्क प्रधान चिन्तन के कारण अतीत के प्रति अविश्वास व 'स्व' में अनास्था आदि कारणों से हमारे पुराने मूल्य प्रदूषित हो गए है। जिसके फलस्वरूप मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता महसूस

Scanned by PDF Scanner